बिस्मिल्लहिर्रह्मानिर्रहीम

अल्लहुम्मा सल्लि अला मुहम्मिंदव्व अला आलि मुहम्मदिन

हज़्रत महेदी अलॅहिस्स्लाम दस्वी (10) सदि हिजरी में (अहादीस)

1:हज़्रत ज़हाक बिन ज़मल रज़ी अल्लहु अन्हु से मर्वी है के नबि करीम सल्लल्लाहु अलॅहि व आलिहि व सल्लम ने फ़र्माया के दुन्या की उमर सात हज़ार (7000) बरस और उसके आख्री हज़ार में 'मै हूँ *(तिब्रानि, हाकिम, बैहक़ी, तफ़्सीर इब्न कसीर, रूहुल मआनी, तफ़्सीरुल तिबरी, कन्ज़ुल आमाल, जलालुद्दीन सुयुति-जामिअ)।*

2:इस दुन्या से (5600) सल गुज़र चुके हें *(अहमद बिन हन्बल, अल-बुर्हान फ़ि अलामात महेदि अखिरु -ज़्ज़मां)*

3:हज़्रत अब्दुल्लह इब्न उमर रज़ी अल्लाहु अन्हु ने सुना के नबि करीम सल्लल्लाहु अलॅहि व आलिहि व सल्लम ने फ़र्माया मुसल्मानो! गुज़्री उम्मतों की उम्रों के मुक़ाब्ले में तुम्हारी उम्र ऐसि है जैसे असर से मग्रिब तक का वक़त होता है *(बुखारी) {7000 सल /5 नमाज़=1400 शम्सी 14x3=42=1442 क़म्रि साल 5600+1400=7000. ऑर वो अप्नि ग़ार मे 300 बरस ठहरे रहे ऑर इस पर नॉ सल ऑर(सुरह18, आयत 25)}*

4:रसुल अल्लाह सल्लल्लाहु अलॅहि व आलिहि व सल्लम ने फ़र्माया मेरी उम्मत कि उमर 1500 बरस से ज़्यादा नहि होगि *(जलाल उद्दिन सुयुति-अल-कश्फ़ -अह्मद बिन हंन्बल)*

5:हज़्रत अबु हुरेरह रज़ी अल्लाहु अन्हु से रिवायत है के मेरे इल्म-व-यक़ीन में रसूलुल्लाह सलेल्लाहु अलॅहि व आलिहि व सल्लम ने फ़र्माया के अल्लाह मबऊस करेगा इस उम्मत में हर सदी के रास पर एक ऐसे शख़्स को जो इस उम्मत के लिये इस के दीन कि तज्दीद करेगा। *(अबू दावूद)*

6:हज़्रत अबू हुरेरह रज़ी इल्लाहु अन्हु से मर्वी हे के कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलॅहि व आलिहि व सल्लम ने मिन्जुम्ला इन बातों के जिन को मे जान्ता हूँ के ये हे के आप सल्लम ने फ़र्माया अल्लाह मबऊस करेगा इस उम्मत में हर सदी के रास पर एक ऐसे शख्स को जो इस उम्मत के लिये इस दीन की तज्दीद करेगा ओर फ़र्माया मुजद्दद दस्वीं *{901-910}* सदी में वही महेदी हे। *(जलालुद्दीन सुयुती-मिर्क़ातुस सऊद)*

7:हज़्रत अबू *साल्बा* खुशनी रज़ी अल्लाहु अन्हु से रिवायत हे के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलॅहि व आलिहि व सल्लम ने फ़र्माया अल्लाह पाक इस उम्मत को आदे दिन *{500 साल}* से कम नहीं रखेगा। *(अबू दावूद)*

8: हज़्रत सा'द अबि वख्खास रज़ी अल्लाहु अन्हु से रिवायत हे के रसूलुल्लाह सल्लेल्लाहु अलॅहि व आलिहि व सल्लम ने फ़र्माया तह्क़ीक़ के मे ज़रूर उम्मिद रख्ता हूँ के आजिज़ ना होगी मेरी उम्मत अप्ने पर्वर्दिगार के पास अगर इन्हें मोहल्लत दी जाए निस्फ़ यॉम की। सा'द से कहा गया के निस्फ़ यॉम कित्ना हे तो कहा के पाँच सॉ साल(500)। *(अबू दावुद)*

9:हज़्रत अब्दुल्लह रज़ी अल्लहु अन्हु ने नबि करीम सल्लल्लाहु अलॅहि व आलिहि व सल्लम से रिवायत की हे आप सल्लम ने फ़र्माया के अगर दुन्या खतम होने एक दिन*(1000 साल)* बाखी रह जयेगा तो अल्लाह पाक उस दिन को इत्ना दराज़ कर देगा के मेरी अह्ले बॅत से एक शख्स *(महेदी)* मबऊस होजाये जिस का नाम मेरा नाम ऑर उस के बाप का नाम मेरे बाप का नाम के मुताबिक़ होगा। *(अबू दावुद)*

10:हज़्रत अबू सइद अलखुद्री रज़ी अल्लाहु अन्हु रिवायत कर्ते हें के रसूलुल्लाह सल्लेल्लाहु अलॅहि व आलिहि व सल्लम ने फ़र्माया मेरे अह्ले बॅत *{महेदी}* की मिसाल ऐसी हे जॅसे नूह अलॅहिस्स्लाम की कश्ती, जो सवार हुवा नजात पाई, जिस ने ग़फ़्लत की ग़र्क़ हुवा। *(तिब्रानि, अल-हाकीम, क़ज़ायि, इब्न बुशरान, अबू नईम, अल-बज़ार)*

11:हज़्रत जा'फ़र सादिक़ रज़ी अल्लाहु अन्हु रिवायत कर्ते हें के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलॅहि व आलिहि व सल्लम ने फ़र्माया - वो उम्मत कॅसे हलाक होसक्ती हे जिस के शुरू' में मे *(सर्दारे दो आलम)* हूँ, दर्मियाँ में महेदी ऑर आखिर में मसीह हें। *(रज़ीन, हाकिम, अबू नईम, मिश्कात, कन्ज़ुल आमाल, अल-कुनजी, अल-इब्राली, इब्न असाकर, तारीक़ दमिश्क़, इब्न मग़ाज़ली, मुनाक़िब अली, कुनजि-अल बयान, जामि-अल सुयुती, फ़राएद-अल सिम्तीन फ़ी फ़ज़ाएल सिब्तॅन, अल अलाइ-अल तह्सील, जलालुद्दीन सुयुती- तारीक़ खुलफ़ा)*

12:तह्क़ीक़ के नबि सल्लल्लाहु अलॅहि व आलिहि व सल्लम एक हज़ार *(1000)* बरस अप्नी खबर में नहिं ठ्हेन्गे। *(जलालुद्दीन सुयुती-अल कशफ़)*

13:हज़्रत मुहम्मद बिन हनीफ़ा रज़ी अल्लाहु अन्हु रिवायत कर्ते हें के वो कह्ते हें हम हज़्रत अली रज़ी अल्लाहु अन्हु के पास बॅठे हुए थे एक शख्स ने उन से महेदी की निस्बत सवाल किया तो उन्होंने कहा अभी बहुत दूर की बात हे अप्ने हाथ से नो *{900}* की सूरत बनायी ओर कहा के वो आखिर ज़माने में ज़ाहिर होगा। *(नईम बिन हम्माद, अल सलामी, 'उक़्दु दुरर फ़ी अलामाते अल महेदी अल मुन्तज़र)*

ये सारी अहादीस हज़्रत सय्य्द मुहम्मद जोन्पूरी महेदी मौऊद अलॅहिस्स्लाम *(847-910 हि)* पर सद सद्फ़ी सादिक़ आती हें- आमन्ना व सद्दक़्ना।

अब्जदः 847 व अश्हदु अन्ना मुहम्मद अब्दुह् व वसूलुह्

910 सुम्म इन्न अलॅना बयानह् (*सुरह* 75 आयत19)

याद्दाश्तः{फ़्लवर ब्राकेट} की तह्रीर कुतुबे अहादीस से नहीं हें।